रिकॉर्ड :– ये कौन आज आया सवेरे–2.....
ओमशांति! आज सभी सेन्टर्स के जो भी सर्विसेबुल बच्चे हैं, जो अपने बेहद के बाप की महिमा को जानते हैं वा शिवबाबा की महिमा को जानते हैं, पहले–2 उनके लिए ये सबक मिलता है कि उनकी जो भी कम्पलीट महिमा है...; क्योंकि वो तो गाया जाता है कि उनकी महिमा अपरम्पार है। अभी बच्चे तो जानते होंगे ज़रूर, उनकी महिमा अपरम्पार। तो सभी सेन्टर्स के जो भी सर्विसेबुल बच्चे हैं, वो पूरी महिमा लिख करके बाबा को मधुबन में भेज देवें। फिर देखें कि बाप की महिमा को जानते हैं या नहीं; क्योंकि अगर महिमा है, तो है तो एक की ही। इस समय की बात है; क्योंकि इस समय में तो सभी आत्माएँ हैं पतित। तो पतित को कहाँ तक पावन बनाते हैं, और तो दूसरा कोई है नहीं पतित को पावन बनाने। अभी बच्चे तो जानते हैं कि जो पावन थे, सो तो थे ही सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी–नारायण और उनकी डिनायस्टी भी कहें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार; क्योंकि जो बहुत ही पावन बने होंगे और योग–ज्ञान में होंगे, वही ऊँच पद पाया होगा जरूर या पाएँगे। पाया था। तो महिमा तो एक की ही है। ऐसे भी नहीं कहेंगे कि श्री लक्ष्मी–नारायण की महिमा करते हैं, लक्ष्मी–नारायण की महिमा वही श्रीकृष्ण की महिमा गाते हैं। तो ये सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम– अभी मर्यादा पुरुषोत्तम महिमा तो कोई शिव की नहीं है। ये अलग महिमा हो गयी; क्योंकि हर एक का पोजीशन वा पार्ट अपना–2 होता है। हर एक की जीवन कहानी या बायोग्राफी सबकी अलग–2 होती है। तो समझ आ जाना चाहिए मनुष्यों को कि ऊँचे में ऊँची महिमा किसकी है; क्योंकि मनुष्य तो इस समय में बिचारे कुछ जानते ही नहीं हैं; क्योंकि बुद्धिहीन हो पड़े हैं। तमोप्रधान हैं इसलिए। तो बाबा पहले ही पहले बैठ करके अपना परिचय देते हैं। परिचय माना अपनी बायोग्राफी बताते हैं। मनुष्य उनकी बायोग्राफी गाते ज़रूर हैं कि ज्ञान का सागर है। जैसे बाबा कहते हैं तुम बच्चों को कि सभी उनकी महिमा लिख करके आओ, जो–2 भी कुछ जानते हैं। ऐसे तो बहुत बच्चे बिचारे हैं जो कुछ जानते ही नहीं हैं। फिर भी जो जानते हैं सो शिवबाबा की महिमा लिखकर आएँ, तो बाप जानें तो सही कि पहले तो बाप की महिमा जानी है कि उनको ही नहीं जानते हैं। तो उनकी सारी महिमा, जो भी लिखी हुई है, बहुत दफा गायी हुई है, बहुत दफा बाबा टेलीग्राम्स में देते हैं ये लिबरेटर है, ओशन ऑफ नॉलेज है। इंगलिश में भी है, तो हिन्दी में भी है। तो हिन्दी में लिखकर आवे या इंगलिश में लिखकर आवे ; क्योंकि बच्चों को तो रिगार्ड उनका ही है। सारी दुनिया को रिगार्ड उनका है ज़रूर; परन्तु बिचारे जानते नहीं हैं बाप को। तो इसलिए बाबा कहते हैं कि जो जितना जानते हैं; क्योंकि अपने बाप की महिमा बतानी तो है ना कि कौन है। यूँ तो सारी दुनिया में जो भी मनुष्य मात्र हैं सतयुग से लेकर कलहयुग तक, हर एक मनुष्य की महिमा। जहाँ–2 जिस–2 गाँव के या देश के हैं वो इस समय में जानते हैं। इस समय की बात की जाती है। पास्ट जन्म में क्या था वो तो कोई बात ही नहीं है। ये तो इस समय की बात है कि मनुष्य किस–2 महिमा के लायक हैं, किस–2 पोजीशन पर हैं। इस समय में बाबा भी यहाँ हैं; क्योंकि आया हुआ है पतितों को पावन करने। ये बिचारे समझते नहीं हैं कि हम कोई पतित हैं। ऐसे थोड़े ही समझते हैं कुछ। सन्यासियों को बोलेंगे– तुम पतित हैं, तो क्या कहेंगे? गालियाँ देंगे। कोई भी मनुष्य को तुम चलते–2 कहो– तुम पतित हो, भ्रष्टाचारी हो, तो बिगड़ पड़ेगा एकदम। अपन को कहते रहते हैं– हे पतित–पावन आओ या कोई भी देवता के आगे जा करके अपना वो वर्णन करते हैं। उसमें भी सभी ये वर्णन ज़रूर करते हैं कि हम विकारी हैं, नीच हैं, पापी हैं। ये ज़रूर कहते हैं। पापी माना ही पतित हुए। जाते तो हैं ना। वहाँ जा करके सच कहते हैं; क्योंकि देवताएँ सच्चे बाबा द्वारा सच्चे बने हैं। तो वो सच्चे ही गिने जाते हैं। सचखण्ड के मालिक हैं तो सच्चे ही गिने जाते हैं। तो उन सच्चों के आगे जो हो गए हैं सचखण्ड के मालिक ; फिर ये जो .. खण्ड में रहने वाले, भले ये उनको मालूम नहीं है कि हम ही सो पूज्य सचखण्ड के थे,

अभी हम सो झूठखण्ड के पुजारी बने हैं। वो मनुष्यों को मालूम नहीं बन पड़ता है किसको भी। ये भी तुम्हारे से भी थोड़ों को बहुत याद है कम ; क्योंकि इतना योग में नहीं रहते हो। बहुत हैं। ढेर हैं। भले भाषण बहुत अच्छा करेंगे; परन्तु मैनर्स जो योग से बननी है वो योग है नहीं। इसलिए मैनर्स बनती नहीं है। वो जो सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण बनना पड़ता है ना। वो जो पतित बन गए हैं, पावन बनना है ना। पावन तो योग से बनना है ना। तो योग बहुतों का कम है। वास्तव में योग की ही तो महिमा है ना। देखो, ज्ञान मिक्स हो गया। जैसे ये शास्त्रों का भी ज्ञान, भगवान ने भी आ करके ज्ञान दिया। 'ज्ञान' तो नाम एक ही है सिर्फ। बाकी योग की है। ये है याद की यात्रा। इस योग में और दुनिया के योग में तो रात–दिन का फर्क है। कोई भी नहीं जानते हैं बिल्कुल ही। भले ज्ञान की कुछ न कुछ प्वाइंट्स चलो आ भी जावे; क्योंकि बाप ने समझाया है कि ये जो गीता का ज्ञान है वास्तव में, थोड़ा–बहुत ज़रा आटे में लूण जितना इसमें है। गीता में या भागवत में या रामायण में या जो कुछ भी है। चलो, महाभारत में लिख दिया– रथ पर रथी। अच्छा, उन्होंने भूल की है, रथ घोड़े का बना दिया है, अर्जुन को बैठा दिया है। खुद रथ में और वो रथ में अर्जुन को बैठ करके सुनाते हैं; पर है तो सही ना रथ में। बाप आ करके इस भागीरथ, रथ नाम इसका भी तो है ना। ये भी बाबा का रथ है ना। रथ–घोड़े। घोड़ा है ना, सवार है ना इनके ऊपर। ये सबकी आत्मा का रथ है, जिसमें आत्मा बैठ करके कर्म करती है। तो ये सभी महीन बातें बच्चे बहुत मुश्किल समझते हैं। कोई–2 विरला हैं, जो ऊँच पद पाने वाले हैं, वो समझ सकते हैं। नहीं तो मासी का घर नहीं है ये बातें समझने की। भले कितना भी बैठ करके समझाओ तो भी कोई बुद्धि में धारण नहीं होती है। न वो मैनर्स कोई सुधरते हैं; क्योंकि योग से ही मैनर्स सुधरते हैं। वो तो है टॉक। ये दुनिया की हिस्ट्री–जाग्रफी बैठ करके समझाना, ये तो टॉक है; परन्तु बाबा बोलते हैं ये जो पवित्रता जिसको कहते हैं (कि) बाबा, हम पतित से पावन कैसे बनें? सो कोई ज्ञान से थोड़े ही बनते हैं। पतित से पावन बनना ही है योग से। सो योग में कमी है। बहुत की कमी है। जो भी महारथी हैं उनकी भी कमी बहुत है। योग में मेहनत लगती है; क्योंकि योग में ही तूफान आते हैं। ज्ञान में कोई तूफान थोड़े ही आते हैं। देखो, भक्तिमार्ग में भी जब श्री लक्ष्मी–नारायण की या कृष्ण की याद में बैठते हैं तो तूफान आते हैं। घर याद पड़ेगा, फलाना याद पड़ेगा। भक्तिमार्ग में भी यही हाल है कि झट बुद्धि का योग चला जाएगा। नॉलेज तो कोई नहीं, पुस्तक कोई पढ़ना है या पुस्तक किसको पढ़ाना। वो तो याद की बात है। वो तो जैसे स्कूल है। जैसे चिल्ड्रेन स्कूल में किताब पढ़ते हैं तो वो चिल्ड्रेन बैठ करके फिर भी रिपीट करते हैं; परन्तु ये वो पढ़ाई की बात तो नहीं है ना। इसमें पहले है योग की बात। योग में कमज़ोरी बहुत है। जिसलिए योग में नहीं आने के कारण देहअभिमानी बनते हैं तो बहुत ही भूलें होती हैं। वो लक्षण सुधरते ही नहीं हैं। वो खुशी भी...। याद में खुशी...। देखो, स्त्री है तो पति की याद में खुश रहती है। भले पति कितना भी गरीब हो या साहूकार हो; पर पति का विछोड़ा उनको बहुत लगता है। तो ये भी है पतियों का पति। इनको भी विछोड़ा इस समय में नहीं होना चाहिए; क्योंकि कहते हैं कि मैं तुम्हारा माशूक हूँ। आशिक, अभी मुझे याद करने से तुम्हारे जो सभी कट चढ़ी हुई है, जिससे तुम इतने डर्टी ब्रुट्स बन गए हो, तो तुम देवता बन जाएँगे। देखो, योग में इतनी कितनी है। तो योग की है कमी। सभी सेन्टर्स में जो भी महारथी हैं अक्सर करके उनकी योग में कमी है। वाचा सुनाना तो बच्चों को भी सिखलाया जाता है ना। बेबियों को... वो भी कुछ सुन करके झट अच्छी तरह से बैठकर सुनाएँगी। बाकी योग थोड़े ही बिचारी को होता है (कि) मैं शिवबाबा को कैसे याद करूँ। ये तो ऐसे ही बिचारी बैठते हैं। समझो कि बैठते हैं शिवबाबा की याद में; परन्तु कोई बुद्धि वहाँ जाती थोड़े ही है शिवबाबा के..। वो तो उनकी बुद्धि बनती जाती है, कहाँ न कहाँ चली जाती है। इसलिए बाबा अटेन्शन दिलाते हैं कि उस बाबा की, जिसके साथ योग लगाना है, उनकी पूरी महिमा लिख करके आओ; क्योंकि उसकी महिमा को कोई जानते ही नहीं हैं ना; क्योंकि सर्वव्यापी कह दिया तो

महिमा ... कोई क्या जानते हैं। वो पतित–पावन है, कहते हैं; परन्तु कैसे है, उनकी महिमा तो कोई जानते नहीं हैं ना। महिमा तो बड़ी भारी है ना। तो ये महिमा उनकी आनी चाहिए। जो–2 भी अपना पुस्तक है या छपते हैं, उनमें पहले–2 तो उनकी महिमा ज़रूर आनी चाहिए; क्योंकि उसकी महिमा को कोई जानते ही नहीं हैं। तो उसकी महिमा अलग है ना। कृष्ण की भी, इस लक्ष्मी–नारायण की, सो भी पीछे भी लक्ष्मी–नारायण की। उनको तो उर्फ लिख सकते हैं कि राधे–कृष्ण। ...तो उनसे जो वर्सा मिलता है...। बाबा ऊँचे ते ऊँचा भगवत है ना। तो उनकी महिमा उनसे न्यारी। उनको तो बनाते हैं– सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण। ये सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण कोई शिवबाबा को थोड़े ही कहा जाता है। उनकी महिमा बिल्कुल अलग है, उनकी महिमा अलग है। तो उनकी महिमा भी लिख करके आवे और इनकी भी महिमा लिख करके आये ; क्योंकि ये उनसे वर्सा पाते हैं। मुख्य प्रिन्सीपल। फिर भले दूसरे भी पाते हैं। तो मनुष्यों को फर्क पड़े ; क्योंकि.....गीता में भगवान के बदले में बच्चे का/मनुष्य का दे दिया है। भले दैवी गुणों वाला है, तो भी फिर भी है तो मनुष्य ना, साकार तो है ना। आकारी का भी नाम नहीं दे दिया है। दे दिया है झट साकार का, जिस बच्चे ने पद पाया है गीता से। ये बात समझने की बड़ी भारी है ना, ये बात कोई की बुद्धि में बैठती नहीं है। गीता का भगवान कृष्ण–2 कर–करके सभी रड़ियाँ मारते रहते हैं। तो कृष्ण की, लक्ष्मी–नारायण की महिमा और उसमें लिख देना होता है कि बचपन में राधे–कृष्ण, स्वयंवर के बाद...। उसने तो बैठ करके...। गीता सुनाने की तो बात ही नहीं निकलती है। क्या वो बैठ करके गीता सुना करके फिर शादी की? ये तो बात हो ही नहीं सकती है कि गीता सुना करके और फिर जा करके शादी की और राज्य किया और फिर वो पुनर्जन्म में आया। ये तो हो ही नहीं सकता है। इनको पद भी तो दिलाने वाला वो है। कृष्ण की आत्मा लिखे, भई कृष्ण की आत्मा ज्ञान सुनाया। सो भी कोई आत्मा ज्ञान नहीं देती है। कृष्ण की आत्मा ज्ञान सुनाया है। हाँ, पीछे ये ज्ञान देते हैं। देते हैं ज़रूर सांवरा ... परन्तु उनकी मिलती है मत, ज्ञान, तब ये तुमको ज्ञान दे सकते हैं। ये तो बहुत गुह्य बातें हैं समझने की। तो महिमा अलग–2 लिखने से...। सब बच्चे महिमा लिख करके आवें, उनकी अलग, उनकी अलग। ..सब फिर वाणी में उनको समझाया जाएगा। मैं भी समझूँगा, बाबा भी समझेगा कि इनको बेहद बाबा की महिमा बहुत ऊँचे ते ऊँची...। तो घड़ी–2 स्मृति आने से, फिर भी तो ये भी योग हुआ ना। तो कोई न कोई प्रकार से बच्चों का जो योग बहुतों का टूटा हुआ है, उनका उसमें <u>लग जावे।</u> तो उन्नति को पाएँगे। फिर सर्विस भी एक्युरेट करते रहेंगे। नहीं तो सर्विस एक्यूरेट हो नहीं सकती है; क्योंकि जिसमें जो अवगुण हैं, वो उनको...। वो विकार में जाते हैं, उनको बोलना– देखो, विकार में कभी नहीं जाना है। तो वो कैसे हो सकेगा। वो उसको कहते हैं कि देहीअभिमानी भव और खुद देहअभिमानी हो, तो उनका तीर कैसे लगेगा! क्योंकि सच्चे दिल पर साहेब राज़ी होगा ना। सच्ची दिल तो ज़रूर चाहिए ना। तो सच्ची दिल बहुत कम की है। दूसरे को कुछ कहते हैं– देहीअभिमानी भव और खुद देहअभिमान में, सो भी भरे हुए बहुत। वो निकल ही नहीं सके देहअभिमान से। ऐसे–2 बच्चे हैं, फिर नामी–ग्रामी। बाबा को तो अच्छा नहीं लगेगा ना कि खुद अच्छे नहीं हैं और ऐसे ही बहुत कहते हैं। सेन्टर्स में भी बहुत...। देखो, ये कहते हैं कि इनको भगवान पढ़ाते हैं और ये तो देखो इनसे प्रीति, इनसे बात–चीत, इनकी चलन तो देखो। तो निंदा तो कराते हैं ना। बाबा बच्चों को समझाएँगे तो सही ना कि बच्चे, तुम सर्विस तो करते हो, एक तरफ में सर्विस करते हो, दूसरी तरफ में निंदा भी कराते हो। ये तुम्हारी एक्टीविटी जो होती है सेन्टर्स में, वो कोई ठीक नहीं है। जो कोई देखते हैं तो उनको ये अच्छा नहीं लगता है कि ये आपस में भुन–2, भुन–2 करते रहें या आपस में प्राइवेट बातें करते हैं। तुम लोगों की कोई भी प्राइवेट बातें हैं ही नहीं कुछ। समझा ना। प्राइवेट बातें जो करते हैं वो ज़रूर कोई शैतानी ही करते हैं आपस में कुछ न कुछ। किसकी निंदा करते होंगे। ये करते हैं ना जाकर भुन–2 में। देखो, भुन–2 में करते रहेंगे, कोई जाएँगे, चुप कर देंगे।

अगर ज्ञान की बातें करते हैं, चुप करने की क्या दरकार है? ऐसे बहुत हैं बच्चियाँ जो आपस में गंद बकते रहते हैं। ज्ञान नहीं है तो फिर है गंद। योग भी नहीं है। अगर ये ज्ञान भी नहीं है तो बाकी है गंद। सो तो देखे हैं कि गंदी दुनिया बनी हुई है। दुनिया का क्या हाल है एकदम! बिचारों को कुछ भी मालूम नहीं है कि ये क्या होते हैं यानी ड्रामा के एक्टर्स तो सभी हैं ना। ये तो समझते हैं ना हम एक्टर्स हैं। ये नाटक है या ये कोई खेल है जिसमें हम आत्माएँ दूर से आ करके यहाँ पार्ट बजाते हैं और ये भी कहते हैं कि सृष्टि ड्रामा का नाटक। जैसे–2 वो नाटक फिर से रिपीट करते हैं तैसे ये बेहद का नाटक भी रिपीट करते हैं। अभी बेहद का नाटक रिपीट करते हैं। सृष्टि का चक्कर फिरता है, ऐसे भी कहते हैं। वर्ल्ड की हिस्टी–जॉग्राफी रिपीट। अब ये कौन कहता है? मनुष्य कहते हैं। अच्छा, मनुष्य कहते हैं– वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट कैसे होती है, तो मालूम होना चाहिए ना। न मालूम है तो बोलेंगे– जनावर है, जंगली है। मनुष्य हो करके भी कोई जंगली है यानी जानते हो और कहते हो कि सृष्टि का चक्कर फिरता है। सृष्टि का चक्कर फिरता है माना सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग, संगमयुग फिर सतयुग। तो मालूम होना चाहिए– सतयुग में क्या होता है, त्रेता में क्या होता है, द्वापर में क्या होता है, कलहयुग में क्या होता है। फिर भला कलहयुग के बाद, कलहयुग में सृष्टि तो पुरानी हो जाती है। तमोप्रधान भी हो जाती है। ..तो ये जो बात बाबा बैठ करके समझाते हैं वो कोई मनुष्य नहीं जानते हैं। कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। विद्वान,आचार्य,पण्डित, ये कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चों को समझाते हैं; परन्तु याद नहीं रहती है। ...सब भूल जाते हो। ये भी अगर याद पड़े कि सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है, तो भी चक्रवर्ती बहुत अच्छा बनो और बाप भी याद आवे; पर तुम सारा दिन झरमुई–झगमुई...। बाबा सबके लिए तो नहीं कहते हैं। सब तो देखो सर्विस कर रहे हैं ना। प्रदर्शनी के लिए इतना मेहनत कर रहे हैं, फलाना कर रहे हैं; परन्तु बाबा, जो मेहनत करते हैं, उनको भी कहते हैं कि तुम्हारी मेहनत फलीभूत अच्छी तब होगी जब तुम्हारे में मैनर्स होंगे, जब योगी होंगे और तुम, जो गाया जाता है– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी...। ये तो देहीअभिमानी ना। बाबा ने समझाया कि ये सभी देही अभिमानी थे, जिनका गायन गाया जाता है– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण...। सो देहीअभिमानी थे यानी उनमें आत्मअभिमान था। तो आत्म अभिमानी बनना पड़े ना ...। जिनमें देहअभिमान बनता है तो कोई झरमुई झगमुई। यहाँ बैठ करके बोलेंगे– भई, ये क्रोध महाशत्रु है। घर में जा करके ठिक्कर–2 पर, भित्तर–2 पर। अरे, बहुत हैं बच्चे ऐसे या नाम–रूप में फँस करके... या कोई न कोई इच्छाएँ रहेंगी– हमको ...चीज़ चाहिए, ये चाहिए, वो चाहिए, वो चाहिए, चाहिए–2 देखो। वो तो है ना कि चाहना ही बंद करनी है एकदम। चाहना क्या? बाप तो सब आशाएँ आ करके आपे ही पूरी करते हैं ना। खाना तो मिलता ही रहता है, वो तो कोई बात ही नहीं है। बाकी तुमको ऐसी युक्तियाँ बताते रहते हैं कि अभी तुम्हारी ये सब चाहना बंद हो जानी चाहिए– मुझे ये चाहिए, वो चाहिए, फलाना चाहिए, धूर चाहिए, छाई चाहिए। नहीं, सब चाहना बंद। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि कपड़ा (न) होवे तो तुम माँगो नहीं। नहीं–2, ये तो तुम यहाँ के बच्चे हो ना। तुम हैं यहाँ के चिल्ड्रेन। चिल्ड्रेन को अभी कोई चीज़ नहीं है, बाबा को कैसे मालूम पड़ेगा। चीज़ नहीं है तो बोला– भले बच्चे, माँगो; परन्तु कोई भी रीस नहीं– इनके पास ये अच्छी चीज़ है, मुझे भी अच्छी चीज़। ये चाहना हो गयी। ये इनको अच्छा चीज़ मिलता है, इनको ऐसा दिया, नहीं, वो भी अच्छा नहीं है। इसमें सहन भी करना चाहिए ना; क्योंकि यहाँ तो एक रोटी का टुकड़ा खाना है। वो गाया जाता है ना– रोटी–टुकड़ा खाना और ईश्वर के गुण गाना। कोई और पहाका है। तो जो याद करते हैं ना, उनका पेट जैसे कि भरा रहता है खुशी में। कहा जाता है ना खुशी जैसी खुराक कोई नहीं है। तो तुम बच्चों को खुशी तो अपार होनी चाहिए। अरे, बाबा हमको मिला हुआ है! अरे, हम वैभव तो वहाँ जाकर भोगेंगे। यहाँ के क्या वैभव हैं पाई–पैसे के! कोई बताशे मिले या कोई पेड़ा मिले या फलाना मिले, खुशी इनमें कोई थोड़े ही है; क्योंकि हम जानते हैं कि वैभव तो हमको

वहाँ मिलना ही है। उसके लिए तो हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं। उसी के लिए ही तो बाबा आ करके योग...। अगर हम वैभव यहाँ कोशिश करेंगे कुछ भी, तो फिर वहाँ कम हो जाएगी। नहीं, यहाँ तो इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा मात्रम् माना कोई भी फालतू इच्छाएँ नहीं। रेस–वेस नहीं (कि) ये ये पहनते हैं, हम भी ये पहनें...। नहीं, ये धंधे में थोड़े ही जाती है। वो बिचारा बाप को जानते ही नहीं हैं। मनुष्य हो करके अगर बाप को नहीं जाने...। देखो, बाबा कभी–2 कोई से पूछे– भगवान क्या चीज़ है? जैसे कोई जंगली। तो उनको बोला भगवान को कोई न जाने तो वो तो जनावर ठहरा ना। तो बोला– जनावर ठहरा, भला हमको बताइये। ..तो आ करके बैठकर सुनना भी चाहिए, समझना चाहिए। ये तो समझाएँगे ना– भगवान भई बाप है। भगवान अभी बाप कैसा? क्योंकि उन्होंने लिख दिया है ना– भगवान सर्वव्यापी है, तो बाप कैसा(कैसे) हो सकता है! तो शास्त्रों ने, विद्वानों ने, इन्होंने...। विद्वान भी बोलते हैं– व्यास भगवान ने शास्त्र रचे हैं। अभी भगवान ने जो शास्त्र रचे हैं हम वो पढ़ते हैं, हम कोई दूसरी चीज़ तो नहीं पढ़ते हैं। भगवान के ही बनाए हुए हैं। भगवान कौन हैं? .... अभी इनके लिए तो भगवान बहुत हैं, ढेर भगवान हैं। व्यास भी भगवान तो खुद भी .. भगवान। भगवान कोई शास्त्र पढ़ते हैं व्यास के! फिर उनसे पूछो तो कहते हैं– हम भी भगवान। तो देखो, अंधकार लगा पड़ा हुआ है। बाप कहते हैं कि जब बिल्कुल घोर अंधियारा हो जाता है यानी बहुत मनुष्य बिल्कुल अंधियारे में ही चलते हैं, कुछ समझते नहीं हैं बुद्धि एकदम, जब ऐसी इनकी हालत होती है तब मैं आता हूँ, आता(आते) हैं भारत में ; क्योंकि कहते भी हैं ना आ करके– जब–2 भारत में बिल्कुल घोर अंधियारा हो जाता है, बिल्कुल हर एक मनुष्य तमोप्रधान और खुद वो कहते हैं हम पतित हैं। ऐसे तमोप्रधान–पतित बन जाते हैं तब उनको फिर सो देवता बनाने...। अभी बाबा ने 'हम सो, सो हम' का अर्थ भी समझाया। मनुष्य तो 'हम सो, सो हम' का अर्थ भी ये निकाल कर बैठे हैं– हम आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो हम आत्मा। अभी... बाबा ने समझाया ना– हम सो पूज्य, सो हम पुजारी। अभी सो पूज्य कौन बनाते हैं? फिर हम पूज्य कितना समय बनते हैं? सुख कितना समय भोगते हैं? पीछे पुजारी कैसे बनते हैं? दुनिया तो नहीं जानती है ना। बिल्कुल कुछ भी नहीं जानते हैं। हम जानते थे क्या ? हम ऐसे तो अभी कहेंगे ना– हमारी बुद्धि कितनी तुच्छ हो पड़ी थी। कुछ नहीं जानते थे। अहंकार कितना था– मैं जवाहरी हूँ, मैं फलाना हूँ, सुखी हूँ, मोटर वाली हूँ, लखपति हूँ, करोड़पति हूँ। देखो, मनुष्यों को कितना अहंकार है! पर जानते कुछ भी नहीं हैं सब। तो ये है माया का अहंकार, जैसे किसको है देहअभिमान। अब बाप आ करके समझाते हैं– अभी देही अभिमानी बन करके और बाप से सब कुछ सुनना है और बाप को जितना हो सके इतना याद करो। तो जो कहते हो हमको– हे पतित–पावन आओ। तो अभी तुम जानते हो कि बरोबर पतित–पावन आया है। बोलते हैं– पावन बनने का यही एक उपाय है कि मुझे याद करो तो तुम्हारा पाप भस्म होता जाएगा। अभी मूल बात यही हुई ना। मन्मनाभव का भी अर्थ पहले–2 तो ये निकलता है ना कि मुझे याद करो तो पाप कट जावे तो बादशाही के लायक बनो। अभी ये बाप की याद कितना चाहिए। याद में तो फिर खुशी भी होती है। याद न होने से खुशी कम हो जाती है। बाबा ऐसे नहीं कहे (कि) सबके लिए ; परन्तु बाबा तो इशारा देते रहेंगे ना। बच्चे, योग में बड़ा सुख मिलने का है; क्योंकि हम पुकारते ही हैं उनको कि हमको पतित से आ करके पावन बनाओ। हम जो विकारी बन गए हैं। किसको विकारी कहो तो भी बोलते हैं– वाह! विकार बिगर बच्चे कैसे पैदा होंगे? अरे भई, वहाँ निर्विकारी भी तो कोई बात है ना। निर्विकारी का अर्थ ही क्या? कोई तो अर्थ होगा ना। अंग्रेजी में कहा ही जाता है वाइसलेस यानी कोई भी विकार नहीं, सम्पूर्ण निर्विकारी...। फिर विकार कहा किसको जाता है? ...ये भ्रष्टाचार किसको कहा जाता है? तो देखो, कितनी गुप्त बात है! अभी सन्यासियों को भी कहें– तुम भी भ्रष्टाचारी हो। वो बोलेंगे– वाह! हम(ने) घर–बार भी छोड़ा। हम तो वाइसलेस हैं। नहीं–नहीं, वाइसलेस तो हो, पर वाइस से फिर आ करके तुम जन्म लेंगे। ये तो ठीक है तुम वाइसलेस बनते हो; परन्तु पुनर्जन्म तो लेना पड़ेगा ना। अभी उन बिचारों को

ये सब बातें तो मालूम ही नहीं हैं कि हमको पुनर्जन्म फिर लेना है। वो फिर समझते हैं कि हम जा करके लीन हो जाएँगे। हम ज्योति ज्योत में समा जाएँगे, फलाना करेंगे। उनकी तो अनेक बातें हैं। कई या तो पुनर्जन्म मानते हैं, कई कभी....। अनेक मत हैं ना; पर तुम बच्चे तो समझ गए ना कि पतित कहा ही जाता है...। पतित कहो या भ्रष्टाचारी कहो, बात तो एक ही है ना। तो भले वो घरबार छोड़ दें, तो भी ये है ही रावण का राज्य ना। ये रामराज्य तो नहीं है ना। रामराज्य है ही सतयुग से ले करके। रावण राज्य में एक शरीर छोड़ेंगे वो, तो भी विख से ज़रूर पैदा होंगे। तो इसलिए इनको...। अभी इस बात को कि भ्रष्टाचारी किसको कहा जाता है सो दुनिया में एक भी नहीं जानते हैं, सिवाय तुमको कि जो विख से पैदा होते हैं उनको ही कहा जाता है भ्रष्टाचारी और विकारी भी; क्योंकि विकारी बना ही, विकार से जन्म लिया तो विकारी बना ना। ये देवताएँ तो विकार से जन्म नहीं लेते हैं ना। ये तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहा(कहे) जाते हैं ना। पीछे भी देखो गाया हुआ है ये दो कला जब कम होती है तब पिछाड़ी में जब त्रेता आता है तब भी बोलते हैं कि कोई–2 (को) दो बच्चे भी हो जाते हैं; परन्तु वहाँ विकार नहीं है, योगबल से। तो भी होगा योगबल से। विकार की तो शुरुआत होती है द्वापर से ले करके। वहाँ तो कोई हो नहीं सकता है ना। पवित्र तो हो नहीं सके। पीछे भ्रष्टाचार शुरू हो जाता है। उसको कहा ही जाता है श्रेष्ठाचारी दुनिया। उसको कहा जाता है भ्रष्टाचारी दुनिया। फर्क है बिल्कुल ही; परन्तु इन बात को जो भी समझू–सयाने हैं, जो सर्विस पर लगे रहते हैं, सुनते रहते हैं, धारण करते हैं, औरों को समझाते रहते हैं, वो कुछ बुद्धि में रहता है। तो देखो, जैसे सन्यासी हैं। सन्यासियों को पूछेंगे– तुम अपना नाम बताओ तो कभी नहीं बताएगा। बोलेंगे वो तो विकार से...। बाप का नाम क्यों बतावें! देखो, उनकी बुद्धि में क्या है– बाप तो विकारी था ना, जिसने हमारे शरीर को जन्म दिया। वो तो विकारी था ..... हम जब निर्विकारी बन गए, उनको छोड़ दिया, फिर हम उसका नाम क्यों लेवें ? देखो, कितनी गहराई में ये जाते हैं कि वो तो विकारी था, जिसने हमको जन्म दिया। अभी हम उन विकारी का नाम मुख से क्यों लेवें कि हमारा बाप फलाना? उनको विकारियों का नाम लेने...। बहन बताओ ... कभी नहीं बताएंगे। बोलेंगे, ये व्यक्ति मार्ग है ना, ये व्यक्ति का प्रश्न न पूछो। नहीं तो हम तो अभी अव्यक्त बनते हैं ना; क्योंकि पवित्र बनते हैं ना। तो कभी नहीं बताते हैं। तुम तो सब बता देते हो अच्छी तरह से समझा करके कि भई हम थे तो बरोबर। ये जो शरीर है वो तो पतित से ही, विख से पैदा हुआ है। सो भी विख से पैदा होते–2 अभी पतित शरीर बिल्कुल ही जड़जड़ीभूत अवस्था हो गया, उसके साथ आत्मा भी। वो तो कह देते हैं– ये आत्मा थोड़े ही कोई पतित बनती है। आत्मा तो निर्लेप है ना। तो देखो, उनकी बुद्धि में ये बैठा हुआ है। किसने बिठाया है ये राँग बातें? राँग बातें ये रावण की मत। जैसे कहा जाता है ना– भाई, इसकी प्रेरणा से...। जैसे कहते हैं– शंकर की प्रेरणा से उनमें वो आते हैं। तो निमित्त बना देते हैं कि बरोबर देखो रावण की प्रेरणा से मनुष्य असुर बन गए हैं। ऐसे कहते हैं कि शंकर की भी प्रेरणा से वो देखो विनाश का उनको बुद्धि में आ गया है कि ये बनावें...। है सभी बनी हुई बात। कोई प्रेरणा का भी है नहीं। ये तो समझाने के लिए कहते हैं कि बरोबर तुम निमित्त बने हो ज्ञान सुन...। तुम निमित्त बने हुए हो पार्ट बजाने के लिए। तो उनके लिए ये प्रबंध है ही है, बाप को आना पड़ता है। फिर विनाश के लिए भी प्रबंध है कि शंकर द्वारा ये होता है। बाकी है तो ड्रामा में नूँध। देखते हो, वो आपे ही कर रहे हैं। अगर हम न कहें– शंकर की प्रेरणा से... बात एक ही है। विनाश तो होना ही है; परन्तु नाम रख दिया है तो उसका नाम हम कह देते हैं। बाकी विनाश तो, देखते हो बना रहे हैं मूसल वगैरह ...। तो हम कहेंगे आसुरी प्रेरणा है उनके ऊपर। विनाश होना ही है। तो ये ड्रामा में कुछ ये पार्ट रखा हुआ है ब्रह्मा,विष्णु,शंकर का। तो उनको सिद्ध करके बता देते हैं कि शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं वास्तव में। सबसे कम है शंकर का पार्ट। अरे, बाबा का तो पार्ट सबसे बहुत बड़ा है। देखो, भक्तिमार्ग में भी उसका पार्ट कितना बड़ा है। फिर इस समय भी उनका पार्ट है। मेहनत करता है ना।

पीछे वो मेहनत नहीं करते हैं। तो वैसे हम भी मेहनत करते हैं ना ये भक्तिमार्ग में। बड़ी मेहनत करते हैं, धक्का खाते हैं। फिर सतयुग में हम.....सृष्टि है। उसमें हमको फिर सतयुग का सुख मिलता है। बाबा फिर कहते हैं कि जब तुम सुखी हो जाते हो तो मैं फिर शांत देश में बैठ जाता हूँ; क्योंकि उस समय में तो भक्ति नहीं है ना। उस समय तो मुझे कुछ भी नहीं करना होता है। तो मैं निर्वाणधाम में रहता हूँ। सुखी हो रहता हूँ। तुम सुख में हो और मैं शांत में रहता हूँ। हम खुश होता हूँ बच्चों को सुखी देख करके, सुखी बना करके। तो ये सब कुछ बताते हैं ना। मैं वहाँ बैठे–2 देखता हूँ कि मेरे बच्चे नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार सुख कैसे देख रहे हैं। अच्छा, पीछे ड्रामा के अनुसार। अभी ड्रामा को(की) तो बात बाबा जानता था। अभी तुम जान गए हो अच्छी तरह से। कितना जान गए हो बिल्कुल। बस, शिवबाबा। जैसे वो लौकिक के कहते हैं ना– बाबा–2। बाबा अभी हमको पैदा करके, हमारी पालना करके, अभी बाबा जा करके वानप्रस्थी बने हैं। सतसंग करते हैं। संग करते हैं सद्गति के लिए। तो देखो, ये बाबा भी जानते हैं– ये बिचारे बच्चों ने भक्तिमार्ग में बहुत ही तकलीफें ली हैं। तो आते हैं , बोलते हैं– अच्छा, मैं तुम सब बच्चों को शांति वा सुख देने के लिए आया हूँ। तो देखो, बाप आ करके बताते भी हैं ना। यहाँ नाम भी तो हैं ना– सर्व की सद्गति दाता, सर्व पतितों को पावन बनाने वाला। अच्छा, पावन बनाकर फिर कहाँ जाएगा, ये तो मालूम होना चाहिए ना। वो बिचारे लोग तो कह दिया कि सर्व का सद्गति दाता, सभी को पतित से पावन बनाने वाला। फिर क्या होता है? वो तो बिचारे कुछ नहीं जानते हैं। वो तो समझते हैं– आत्मा जा करके परमात्मा में लीन हो जाती है और ऐसे ही जैसे बुदबुदा सागर में लीन होता है। वो तो ऐसे कह देते हैं। फिर अगर ऐसे कहें तो वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी रिपीट होती है, उसमें तो वही एक्टर चाहिए, वही एक्टीविटी चाहिए। अगर लीन हो जाए तो पीछे तो ड्रामा ही खतम हो जावे। कोई नयी चीज़ थोड़े ही बन सकती है। आत्मा ही खतम कर दिया तो पीछे बाकी क्या रहा! नहीं तो आत्मा को कहा भी जाता है– भई, आत्मा इम्पेरिशेबल है, अविनाशी है। बाप भी अविनाशी है। तो फिर जाकर बोलेंगे कि ये ज्योति में लीन हो गया...। तो झूठ बोलते रहते हैं ना। बाप ने आकर....तुम्हारा सारा बताया कि कैसे चक्कर लगाते आते हो। कभी भी कोई एक भी छूट नहीं सकते हैं। कोई एक भी मोक्ष नहीं पा सकते हैं। तो ऐसी मत वाले बहुत हैं ना कि नहीं, मोक्ष हो सकता है। ऐसे–2 करने से ब्रह्म में लीन हो जाएँगे। बस, पीछे मोक्ष हो गया, फिर आएँगे ही नहीं। आत्मा जो बुदबुदा पानी में लीन हो गया तो फिर आएगा कहाँ से? तो ड्रामा से छुटकारा हो गया ना। फिर देखो, अनेक मत है, अनेक समझानी हैं और कल्प पहले मुआफिक जिसको–2 जैसी–2 मत मिली थी तैसे उस मत पर चल रहे हैं। अभी तुमको मिलती है श्रीमत। श्रीमत कहती है पट से पहले–2 तो बच्चे मन्मनाभव। देखो, पहला अक्षर ये कहते हैं कि मामेकम् याद करो, तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। कोई वाणी बैठ करके चलाएगा या किसको बैठ करके सारी सृष्टि का चक्र समझाएगा तो तुम विकर्माजीत थोड़े ही बनेंगे। नहीं, वो तो तुम धन देते हो, धन मिलेगा। बाकी पवित्रता कहाँ! पवित्रता के लिए तो तुमको योग में रहना पड़े। तभी पतित से पावन बनेंगे। योग से ही पतित से पावन ; इसलिए योग की महिमा है बहुत। बहुत भारी महिमा है ; इसलिए योग है तुम बच्चों का कम। इसलिए बाबा फिर ये सबक देते हैं। घर के लिए सबक दिया जाता है ना कि हमको बाप की महिमा सब कोई लिखकर भेजें, तब हम देखें बाप की महिमा पूरी जानते हैं या नहीं। बाप की महिमा भी और फिर बच्चे की भी; क्योंकि ऐसे कहेंगे ना– श्री लक्ष्मी और नारायण, है तो डिनायस्टी ना; परन्तु मुरब्बी बच्चे तो वो हो गए ना, जो पहले–2 राज्य करते हैं। तो ज़रूर उन्होंने पहले–2 श्रीमत पर पूरे चले होंगे ना ... की होगी ना, तब तो बनें। तो देखो, कितना तुम बच्चों को बुद्धि में ये सभी ज्ञान समझाया जाता है कि बच्चे, कोशिश करके याद करो तो खुशी में रहते रहेंगे। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि तुम कोई एक सेकेण्ड में ही योग में टिक जाएँगे। ना–ना। ये तो याद करेंगे, ये लड़ाई है। ज्ञान की लड़ाई नहीं है। ये योग ही लड़ाई है। तुम याद करते हो, वो तुमको भुलाती है–याद करते हो, वो तुमको भुलाती है। ज्ञान में तो हमारे पास बच्चे बड़े तीखे हैं। जाकर देखो, जब बैठ करके समझाते हैं, कैसे देखो अच्छा है। अच्छा, ये भी तो

कभी समझाता होगा ना। मम्मा भी समझाती है तो ये भी तो समझाता होगा ना। ऐसे तो नहीं है कि सिर्फ...। ये तो बाबा तुमको योग में लगाने के लिए बोलते हैं– ये नहीं कुछ बोलते हैं, ऐसे समझो। ये भुट्टू है, ऐसे समझो। तुम ऐसे ही समझो कि शिवबाबा हमको... तो तुम्हारी शिवबाबा के साथ दिल लगी रहे। ये शिवबाबा सुनाते हैं, शिवबाबा सुनाते हैं। समझा ना। देखो, जब मम्मा के पास जाएँगे तो मम्मा सुनाती है। बैठ करके मम्मा को देखेंगे ना– मम्मा सुनाती है..। बाबा यहाँ कहते हैं कि मुझे कोई अहंकार नहीं है। जैसे बाबा है निरहंकारी तो मुझे भी अहंकार नहीं है। ऐसे ही समझो शिवबाबा हमको समझाते हैं, शिवबाबा हमको शिक्षा देते हैं। तो उनको तो याद करो कोई न कोई किस्म से; क्योंकि ये भी जानते हैं कि इनकी शिवबाबा से बुद्धि का योग कम है। इसलिए कहते हैं– अच्छा, मुझे कुछ भी समझो ; परन्तु ये तो समझते हैं कि वाह! मम्मा और ये बाबा बनने वाला तो ये है। सो योग और ज्ञान तो ज़रूर इनमें नंबर वन ही होना चाहिए बाप के पीछे; परन्तु तो भी बच्चों के खातिरी के लिए कि नहीं बच्चे, सभी शिवबाबा समझाते रहते हैं। सो शिवबाबा ही मुरली बजाते रहते हैं। तभी बाबा कहते हैं– अभी तुम शिवबाबा की महिमा लिख करके आओ। देखें, तुम्हारी पूरी महिमा आती है अच्छी तरह से। पीछे हिन्दी में न आवे तो इंगलिश में। इंगलिश–हिन्दी दोनों अक्षर भी लगाना है तो खूब लगा दो; परन्तु महिमा पूरी लिख करके आना। देखो, बाबा सबको कहते हैं ना। तो भले सब भेज देवें, जो–2 भी भेज सकें। फिर उनको उनके ऊपर नॉलेज देंगे, समझानी देंगे। महिमा तो लिखा है शिव की। फिर ये बताओ, जिसकी इतनी महिमा निकाली, उसको याद करते हो; क्योंकि तुम्हारी युद्ध है ही इसमें। बहुत बच्चे सच नहीं कहते हैं। जो सच कहते थे कुछ न कुछ वो चार्ट भेज देते थे। फिर चार्ट कुछ दिन चला करके फिर छोड़ देते। अभी समझ लेते थे कि हम झूठ लिखते हैं। हम सच लिखते ही नहीं हैं। अरे, पौना–2 घण्टा हम याद में बैठते हैं, आधा घण्टा याद में बैठते हैं, किसकी ताकत नहीं है। वो आधा घण्टा या पाव घण्टा बैठेगा, उनमें भी कितना समय तो टूटेगा। अरे, 10 मिनट बैठेगा तो 2 मिनट टूटेगा, 3 मिनट टूटेगा, एक/दो मिनट कोई रहेगा उसमें। तो बिचारों ने वो चार्ट भेजना ही छोड़ दिया; क्योंकि चार्ट सच्चा भी तो चाहिए ना। अरे, बैठते हैं याद करने.. दो मिनट। बाबा कहते हैं ना– मैं गिट्टी खाता हूँ, पक्का करता हूँ कि मैं बाबा की याद में सारा समय...। अरे, ... दो गिट्टी नहीं खाते हैं तो सब भूल जाते हैं वहाँ, उड़ाय लेते हैं एकदम। पीछे याद करते हैं, फिर याद आती है, अच्छा फिर याद करके खाते हैं। ..... बाबा तो समझाते रहते हैं ना। बाबा कहते हैं मैं खेल भी करता हूँ तो भी .... अब मैं खेल कर रहा हूँ इस शरीर के द्वारा। मैं एकदम अपन को बाबा भी कह करके खेल करता हूँ। जैसे कि इस शरीर द्वारा मैं खुद खेल करता हूँ। ऐसे भी करके कोशिश करता हूँ फिर भी भूल जाता हूँ। याद करके करता हूँ ना; पर मैं खुद वो हूँ और बैठ करके इस शरीर द्वारा खेल करता हूँ बच्चों को, वो भी भूल जाते हैं। समझा ना। मैं बाप हूँ, कहीं भी खड़ा रहता हूँ कि मैं–2 सो हूँ। अच्छा, मैं इन बच्चों से ये खेल कर रहा हूँ। बच्चों से तो खेल–पाल करना ही है। तो ऐसे समझ करके जैसे कि मैं शिवबाबा हूँ, तो भी भूल जाता हूँ; क्योंकि माया की लड़ाई है ना। अच्छा चलो, टोली ले आओ। ...कल्याण करना है। बाप से वर्सा लेना है। कृष्ण से वर्सा नहीं लेना है। बेहद के बाप से इन द्वारा वर्सा लेना है। ये तो तुम जानते हो कि बाबा बहुत मीठे हैं। बाबा मेले में आया। अच्छा, ये समझना चाहिए– बाबा इस द्वारा हमको ऐसे शिक्षा देते हैं। शिक्षा को सम्भाल करके सुनना होता है कि ये राइटियस शिक्षा देते हैं या रांग देते हैं। चलो, मम्मा ही आयी हुई है, मम्मा राइटियस .... कहते हैं या रांग कुछ बताते हैं या उल्टा–सुल्टा कुछ। तो ये जो आते हैं किस–2 में। ऐसे फिर बाबा न नहीं कहते हैं। इनकी बड़ी पहचान चाहिए। ध्यान वगैरह तो बाबा ने एकदम बंद कर दिया है। ये ज़रूरत नहीं है। मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।